11

देने के लिए ईश्वरीय प्रोत्साहन

(2 कुरिन्थियों 8; 9)

बदला हुआ जीवन देने वाला जीवन है ...।

हर मसीही व्यक्ति जानता है कि परमेश्वर उससे देने और इस प्रकार देने की अपेक्षा करता है जैसी उसे समृद्धि मिली है। यह सवाल जो हमें परेशान करता है वह यह नहीं है कि हमें देना चाहिए या नहीं बल्कि यह है कि हमें कितना देना चाहिए और हमें ''कितना'' देना चाहिए यह ''क्यों'' पर निर्भर करता है। परमेश्वर को देने के मसीही लोगों के उद्देश्य क्या हैं?

प्रचारक दूसरों को देने की शिक्षा देते हुए कई उद्देश्यों की ओर ध्यान दिला सकते हैं जैसे उदाहरण के लिए बजट पूरा करने क लिए या स्वर्ग में जाने या नरक से बचने के लिए। कई बार बेकार प्रोत्साहनों का इस्तेमाल किया जाता है जैसे शेखी मारने के लिए। परन्तु यदि परमेश्वर हमें बताता है कि हमें क्यों देना चाहिए तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि वे प्रोत्साहन लाभदायक है। जब परमेश्वर हमें बताता है कि ''क्यों'' देना है, तो हमारे लिए अच्छा है कि हम उस पर ध्यान दें!

क्या परमेश्वर कभी ऐसे प्रोत्साहन देता, 2 कुरिन्थियों 8 और 9 देता है। इन दो अध्यायों में पौलुस परमेश्वर की प्रेरणा से कुरिन्थुस की कलीयिसा को उन योजना को पूरा करने के लिए जो यरूशलेम के निर्धन पवित्र लोगों के आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक साल पहले बनाई गई थी, पूरा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए लिख है। जिन उद्देश्यों के लिए वह ध्यान दिलाता है वे देने के लिए दिए जाने वाले परमेश्वर को प्रोत्साहन हैं। वे देने के लिए ईश्वरीय प्रोत्साहन हैं। आइए उन प्रोत्साहनों पर विचार करते हैं।

हमें उदारता से देना चाहिए क्योंकि देना एक अनुग्रह है

2 कुरिन्थियों 9 कहता है: ''अब हे भाइयो, हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं, जो मकिदुनिया की कलीसिया पर हुआ है'' (आयत 1)। यहां पौलुस मकदुनी लोगों के ''परमेश्वर के अनुग्रह'' के रूप में देने की बात करता है (आयत 1)।

2 कुरिन्थियों 8 और 9 में पौलुस देने को परमेश्वर के अनुग्रह के रूप में बताता है। वह पवित्र लोगों के लिए किए जाने वाले चंदे का वर्णन ''अनुग्रह के इस काम'' अभिव्यक्ति से करता है (8:6, 7, 19; 9:14)। वास्तव में पौलुस ''देने'' और ''अनुग्रह'' को लगभग मिला ही देता है। 2 कुरिन्थियों 8:19 में जिसे वह ''अनुग्रह के इस काम'' के रूप में बताता है अगली आयत में वह इसे ''उदारता का काम'' कहता है।

देने को अनुग्रह से मिलाने पर पौलुस का क्या अर्थ लगता है? इस प्रश्न के कम से कम

दो उत्तर हैं। *परमेश्वर हमें देने की योग्यता देता है।* देना इस बात में अनुग्रह है कि यह एक दान है। हम केवल इसलिए दे पाते हैं क्योंकि परमेश्वर हमें देने के योग्य बनाता है। वह ऐसा कैसे करता है? वह हमें वह सब कुछ देता है जो हमारे पास है। वह हमारे मनों में देने की इच्छा भी डालता है। *हमारे देने के द्वारा परमेश्वर अपने अनुग्रह को दिखाता है।* जो कुछ परमेश्वर निर्धनों की सहायता करने और खोए हुओं को सुसमाचार सुनाने के रूप में चाहता है वह उसे हमारे द्वारा करता है। जो भलाई हम कर रहे होते हैं वास्तव में वह परमेश्वर करता है। इस प्रकार लोग हमारे देने के कारण लोग परमेश्वर की महिमा करते हैं (2 कुरिन्थियों 9:11-14)। परमेश्वर कैसा है? वह देने वाला है; वह प्रेम है; वह अनुग्रहकारी है। दूसरों को इसका कैसे पता चलेगा? उन्हें परमेश्वर का तभी पता चलेगा हम जो उसकी संतान हैं जो कोई उसे उदारता से देकर उसको दिखाएं।

हमें उदारता से मकिदुनिया के लोगों के नमूने के कारण

2 कुरिन्थियों 8:1-7 में मकिदुनियों के नमूने की चार बातों पर ध्यान दें।

उन्होंने भारी कंगालपन में दिया

हम जानते हैं कि हमें अपनी आमदनी के अनुसार देना है (1 कुरिन्थियों 16:1, 2) और इस कारण हमें लगता है कि उदारता से देने का फार्मूला यह होना चाहिए कि सम्पत्ति+ड्यूटी=उदारता। यदि कोई मसीही धनवान हैं, तो ड्यूटी या फर्ज का बोझ उसे उदारता से देने को विवष करेगा। परन्तु यहां मिलने वाला फार्मूला है। मकिदूनी लोग वास्तव में ''क्लेश की बड़ी परीक्षा'' और ''भारी कंगालपन'' में थे पर ''उनके बड़े आनन्द'' के साथ उनके कंगालपन ने उन्हें ''उदारता में धनवान'' बना दिया!

इससे हमें पता चलता है कि प्रभु हम से उसे उदारता से देना आरम्भ करने के लिए धनवान बनने की प्रतीक्षा करने की उम्मीद नहीं करता। निर्धन विधवा ने उदारता से दिया था चाहे उसके पास केवल दो ही दमड़ियां थीं (लूका 21:1-4)। उसके मामले में भी आनन्द के साथ कंगालपन उदारता बन गया।

आप क्या हैं? क्या आप देख रहे हैं कि आप जैसे आपको देना चाहिए वैसे देना आरम्भ करने से पहले आपके पास बहुत सा धन होना चाहिए? आप उस आदमी की तरह हो सकते हैं जिसने प्रचारक से कहा: ''यदि मेरे पास बीस लाख डॉलर होते तो मैं उन में से दस लाख प्रभु को दे देता।'' प्रचारक ने उत्तर दिया, ''जॉन, यह तो बहुत अच्छा है। परन्तु यदि तेरे पास दो सुअर होते तो तू उनका क्या करता?'' ''आह,'' ये उचित नहीं है। तुम जानते हो कि मेरे पा दो सुअर हैं। लाखों रूपया अपने पास होने की प्रतीक्षा न करें; जो कुछ इस समय हमारे पास है उसी को उदारता से देना आरम्भ कर दें!

उन्होंने उदारता से दिया

आनन्द और अत्यंत निर्धनता की उनकी बहुतायत ने ''उदारता की दौलत'' में उमड़ गई! पौलुस ने उनकी उदारता को कुरिन्थियों को उदारता से देने को इस्तेमाल किया।

परमेश्वर ऐसे ही देने को चाहता है। पण्डितों ने उदारता से दिया था (मत्ती 2)। बैतनिय्याह की मरियम ने उदारता से दिया था (यूहन्ना 12:1-8); देने वालों को उदारता से देने के लिए कहा जाता है (रोमियों 12:8)। यदि आपको जानना हो कि आप प्राप्त मात्रा में दे रहे हैं तो अपने आप से स्वाल पूछें: ''क्या मैं उदारता से दे रहा हूं?'' यदि आप अपने दान का बचाव उदार दान के रूप में नहीं कर सकते तो यह परमेश्वर को कैसे भा सकता है!

उन्होंने स्वेच्छा से, दिल से दिया

यह समझने के लिए कि वे कैसे देते थे और उनके ''देने का ढंग'' हमारे देने से कैसे अलग है आज की अधिकतर मण्डलियों में दिए जाने वाले चंदे से होने वाले काम पर विचार करें। ज़रूरत पड़ती है। हो सकता है कि यह केवल सप्ताहिक बचट को पूरा करने की हो या किसी विशेष आवश्यकता को पूरा करने की। फिर प्रचारक और/या ऐल्डर घोषणा करते हैं: ''हमें इतना धन चाहिए। कृपया सहायता करें।'' हो सकता है चंदा बड़ जाए। हो सकता है न बड़े। सो और घोषणाएं होती हैं, सरमन दिए जाते हैं बुलेटिन में लेख लिख जाते हैं। लीडर लोग सदस्यों से *आग्रह* करते हैं: ''चंदा दें! हमें इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए इतने पैसों की आवश्यकता है। सहायता करें!''

मकिदूनी लोगों के देने के ढंग पर विचार करें। विचार करें कि यह क्या कहता है: उन्होंने ''अपनी सामर्थ, वरन सामर्थ से भी बाहर, मन से दिया। और इस दान में और पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय में हम से बार बार बहुत विनती की। और जैसा हम ने आशा की थी, वैसी ही नहीं, ...।''

इस सब का क्या अर्थ है? पौलुस और मकदुनियों के बीच में कुछ इस प्रकार से बातचीत हुई होगी:

मकिदूनी: भाई पौलुस, यह रहा हमारा दान, जैसा हम ने वायदा किया था।

पौलुस: बहुत बहुत शुक्रिया ...। मैं इसे गिन लेता हूं। यह तो मेरी उम्मीद से कहीं बढ़कर है।

मकिदूनी: हां, हम इतना ही देना चाहते थे।

पौलुस: तुम सचमुच अपनी आमदन के अनुसार दे रहे हो।

मकिदूनी: हम देना चाहते थे; हमें मालूम है कि मसीही लोगों को अपनी आमदनी के अनुसार ही देना चाहिए।

पौलुस: परन्तु यह तो सचमुच उससे कहीं बढ़कर है जितनी तुम्हारी आमदन है; यह तो तुम्हारी पहुंच से बढ़कर है।

मैं जानता हूं कि तुम अमीर लोग नहीं हो, पर इस समय तो तुम्हारी अपनी हालत पतली है। तुम सचमुच इतना अधिक नहीं दे सकते!

मकिदूनी: परन्तु हम देना चाहते हैं; हमें बहुत आनन्द आता है क्योंकि प्रभु ने हमारे लिए इतना कुछ किया और हमें इतनी आशीष दी है कि हमें दूसरों के साथ बांटने का भाग्य दिया है!

पौलुस: मैं तुम्हारे आनन्द की बहुतायत की सराहना करता हूं, परन्तु मैं नहीं चाहता

कि तुम इतना अधिक दो। तुम गरीब हो और इतना देना तुम्हारी पहुंच में नहीं है; यह सही नहीं है! तुम्हारे लिए अपने आपको और परेशानी में डालकर दूसरों की सहायता के लिए देना सही नहीं है! इसमें से कुछ वापस ले लो!

मकिदूनी: नहीं पौलुस नहीं, हम वापस नहीं लेंगे! हम यरूशलेम के पवित्र लोगों की सहायता करने के योग्य होना अपना सौभाग्य मानते हैं। वे मसीह में हमारे भाई और बहने हैं और उन्हें हम से अधिक हमारे धन की आवश्यकता है! तुम यह सारा ले जाओ!

पौलुस: नहीं मैं नहीं ले सकता! तुम बहुत अधिक दे रहे हो! तुम्हें इतना अधिक नहीं देना चाहिए। यह लो, यह थोड़ा रख लो।

मकिदूनी: नहीं, हम नहीं रखेंगे। तुम इसे ले जाओ। हम इसे वापस नहीं लेंगे।

पौलुस: मैं फिर कहता हूं। तुम बहुत अधिक दे रहे हो!

मकिदूनी: हम कहते हैं कि तुम इसे ले लो; हम अपनी मर्ज़ी से दे रहे हैं न कि इसलिए कि हमारे पास है!

पौलुस: नहीं, नहीं, नहीं! मैं तुम से इतना अधिक धन नहीं लूंगा!

मकिदूनी: अच्छा ठीक है, तो फिर यदि तुम हमारी बात को नहीं सुनते जब हम ज़ोर दे रहे हैं, तो फिर हमारी विनती मान लो! हम तुम्हारे पांव पड़कर विनती करते हैं हमारी बात मान लो। कृपया इस सारे दान को, ले लो। कृपया हमें जो हम चाहते हैं उतना देने दो। हम सच्चे दिन से विनती करते हैं।

पौलुस: परन्तु, तुम बहुत अधिक दे रहे हो ...

मकिदूनी: हम तुम से विनती करते हैं; हम सच्चे दिन से विनती करते हैं। हमें देने दो ...

पौलुस: अच्छा, ठीक है, मैं तुम्हारा दान ले लेता हूं, चाहे यह तुम्हारी बहुत से बहुत बढ़कर है, क्योंकि तुम ने इस भले कार्य में भागीदार बनने के लिए सच्चे दिल से हम से विनती की है।

अब सवाल यह है कि हमारे चंदे की तुलना मकिदुनिया के लोगों के चंदे से कैसे की जाए? यदि इसकी तुलना उनके चंदे से की जाए, तो व्यक्तिगत रूप से हम कितना चंदा दे रहे होंगे? हमारा सप्ताहिक चंदा कितना होगा?

उन्होंने पहले अपने आपको दिया

पौलुस ने कहा, ''उन्होंने प्रभु को प्रिय परमेश्वर की इच्छा से हम को भी अपने आपको दे दिया।'' कोई आश्चर्य नहीं कि मकिदूनियों ने उदारता से दिया! उन्होंने पहले अपने आपको दिया! यदि आप पहले अपने आपको यानी अपने आपको पूरी तरह से यीशु मसीह को समर्पित करते हुए देते हैं, तो उदारता से देना अपने आप हो जाएगा।

दिक्कत यह है कि हमारा विचार यह है कि हमारे मसीह के चेले बनने से हमारे पैसे का हमारा इस्तेमाल प्रभावित न हो। हम कार्टून में दिखाई गई बात ही करने की कोशिश करते हैं। इसमें एक आदमी को बपतिस्मा लेते हुए दिखाया गया। वह पूरा पानी के भीतर था, एक हाथ को छोड़ जिसमें उसका बटुआ कसकर पानी के ऊपर रखा गया था। उसके नीचे लिखा था: ''प्रभु,

मेरी जेब को छोड़ बाकी सब कुछ।'' हम जेब को छोड़ बाकी सब कुछ यीशु को दे सकते हैं। ''सब कुछ देता'' का अर्थ ''जेब'' यानी पैसे और सब कुछ देना है!

पौलुस पत्र के इस भाग की अपनी अपील को यह कहते हुए समाप्त करता है, ''सो जैसे हर बात में अर्थात विश्वास, वचन, ज्ञान और सब प्रकार के यत्न में, और उस प्रेम में, जो हम से रखते हो, बढ़ते जाते हो, वैसे ही इस दान के काम में भी बढ़ते जाओ'' (2 कुरिन्थियों 8:7)। हम कुछ ऐसा ही कह सकते हैं। कलीसिया में कई बातों में महारत है: आपको अपने मित्रतापूर्वत व्यवहार के लिए, एक दूसरे की परवाह के लिए, आपके बहतरीन शिक्षकों के लिए, प्रभु के कार्य में आपके विश्वासयोग्य प्रयासों के लिए, मिशन में आपके योगदान और अन्य जगहों में परोपकारी कार्य के लिए सहराहा जाना चाहिए। अब हम आपको चुनौती देते हैं: ''वैसे ही इस दान के काम में भी बढ़ते जाओ''-यानी देने के अनुग्रह में! हम संसार के लिए और विश्वासियों के लिए उदारता के नमूने बनना सीखें!

हमें उदारता से देना चाहिए क्योंकि हम प्रभु से प्रेम करते हैं

2 कुरिन्थियों 8:8 में पौलुस कहता है कि कुरिन्थुस के लोगों का दान यह प्रमाणित करेगा कि उनका प्रेम सच्चा है; आयत 24 में वह जोड़ता है: ''सो अपना प्रेम और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में है कलीसियाओं के सामने उन्हें सिद्ध करके दिखाओ।'' जो कुछ आप देते हैं, उसकी तुलना उससे करें जो आप दे सकते हैं, जो प्रमाण है कि आप परमेश्वर से कितना प्रेम रखते हैं!

परन्तु हमें प्रभु से प्रेम क्यों करना चाहिए कि हम उस दें? 2 कुरिन्थियों 8:9 में पौलुस कहता है, ''तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल होने से तुम धनी हो जाओ।'' हमारे प्रभु ने हमारे लिए क्या किया? ''वह धनी था,'' उस महिमा की कल्पना करें जो स्वर्ग में उसकी थी! ''वह कंगाल बन गया, ...'' विचार करें कि पृथ्वी पर वह कितना कंगाल था और कैसे मरा। उसने स्वेच्छा से वह बलिदान क्यों किया? ''ताकि ... तुम धनी हो जाओ।'' मसीह के आने से पहले हम खोए हुए, बिना आशा के, आत्मिक रूप में दरिद्र थे। अब हमारी स्थिति क्या है? हमारे पास उद्धार, पवित्र आत्मा, स्वर्ग की आशा है। हम निर्धन थे पर अब धनवान हैं! हमें यह सम्पत्ति कहां से मिली? ''उस के कंगाल हो जाने से तुम धनी हो [गए]'' मसीह से! क्योंकि वह स्वर्ग को छोड़कर आया इस कारण हम स्वर्ग में जा सकते हैं! इससे बढ़कर धनवान हम कितने हो सकते हैं?

परमेश्वर के दान का उपयुक्त प्रत्युत्तर क्या है? हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए और प्रेम करने के कारण हमें उसे देना चाहिए! आप परमेश्वर से कितना प्रेम करते हैं? केवल यह कह देना कि आप उससे प्रेम करते हैं आपके प्रेम को साबित नहीं कर देता। अपने प्रेम को उसे दिखाने के लिए उसे दें! जब आप देते हैं तो आप यह कह रहे होते हैं, ''हे परमेश्वर, मैं तुझ से इतना प्रेम करता हूं।'' क्या आप अपने प्रेम के प्रमाण के रूप में अपने चंदा देने से संतुष्ट हैं?

हमें अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए देना चाहिए

2 कुरिन्थियों 8:10-15 पर विचार करें।

परमेश्वर क्या चाहता है कि हम कितना दें? ''हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुड कुड़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है'' (2 कुरिन्थियों 9:7)। स्वीकार्य दान *स्वेच्छा* से ही होता है यानी हर व्यक्ति स्वयं निर्णय लेता है कि वह कितना देगा पर यह मजबूरी में नहीं बल्कि आनन्द से, मन से हो; यह नहीं *व्यक्तिगत* हो, न कि कोई आपकी ओर से दे; औ *योजना बनाकर*–हर कोई ''जैसा मन में ठाने'' वैसा दे।

कुरिन्थुस के लोगों ने पौलुस की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक साल पहले से चंदा देने का मन बना लिया था (2 कुरिन्थियों 8:6, 10; 9:2)। अब यह प्रेरित उन से वही करने का आग्रह कर रहा था जो उन्होंने करने की योजना बनाई थी, ताकि ''इच्छा करने में'' ''उनकी तैयारी'' उस ''के अनुसार पूरा'' करने से मेल खाए (2 कुरिन्थियों 8:10, 11)। उन्हें अपनी प्रतिज्ञा पूरी क्यों करनी चाहिए? पौलुस कहता है, इसका एक कारण तो यह है कि उसने सबको बता दिया है कि कुरिन्थुस के लोगों ने क्या प्रतिज्ञा की है। फिर यदि वे उसे पूरा करने में नाकाम रहते हैं तो पौलुस का अपमान होना ही है, उनका भी होगा (2 कुरिन्थियों 9:1–5)।

हम इस विचार को अपने ऊपर कैसे लागू करें। पहले तो हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारा दान योजना के अनुसार हो। दूसरा जहां तक हो सके हमें याद रखना चाहिए कि देने के विषय में जो प्रतिज्ञा हम ने परमेश्वर से की है, हम उस प्रतिज्ञा को पूरा करें। तीसरा एक अर्थ में हमे यह याद रखना आवश्यक है कि मसीही बनने पर हम परमेश्वर से यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उसे उदारता से देंगे। उदारता से न दे पाना परमेश्वर से की गई हमारी शपत को पूरा न करना है।

हम दें क्योंकि हमारे दान का इस्तेमाल ईमानदारी से होगा

2 कुरिन्थियों 8:16–9:5 पर विचार करें। ध्यान दें कि यह सुनिश्चित करने के लिए चंदे का इस्तेमाल ईमानदारी से हो पौलुस कितनी सावधानी बरतता है। वह अपने साथ जाने के लिए विभिन्न कलीसियाओं से अच्छे अच्छे लोगों को साथ लेता है ताकि वह यह सुनिश्चित कर सकें कि काम पूरी निष्ठा के साथ किया गया है। इन प्रबंधों में उसका उद्देश्य है कि ''हम इस बात में चौकस रहते हैं, कि इस उदारता के काम के विषय में जिस की सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए। क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं'' (2 कुरिन्थियों 8:20, 21)।

इससे हमें दो बातें सीखनी आवश्यक हैं: (1) आज कलीसिया के अगुओं को कलीसिया के मामलों के अपने प्रबंधन में यह सुनिश्चित करने के लिए कि चीज़ें आदरपूर्वक होती हैं, ''केवल प्रभु ही के निकट नहीं परन्तु मनुष्यों के निकट भी'' भली हैं स्तरक रहना चाहिए। (2) क्योंकि कलीसिया के अगुवे कलीसिया के धन का का प्रबंध करने के ढंग में ईमानदार होने को चौकस रहते हैं इसलिए मसीही लोगों को उदारता से देने को तैयार होना चाहिए।

हमें उस भलाई के कारण जो हमारे दान में होती है देना चाहिए

कृपया 2 कुरिन्थियों 9:6–15 इकट्ठा पढ़ें।

हमारे लिए

पौलुस कहता है कि यदि कुरिन्थी के लोग बहुतायत से देते हैं तो परमेश्वर उन्हें हर आशीष बहुतायत से देगा, ताकि उनके पास इतना रहे कि वे हर भले काम में सहायता कर सकें; अपने संसाधनों को बढ़ा सकें; अपनी धार्मिकता की फलस को बढ़ा सकें। यदि हम बहुतायत से देते हैं तो हमें भी वैसे ही आशीष मिलेगी। हो सकता है कि हम प्रभु के काम में ढीले हों क्योंकि हम उतना देते नहीं हैं।

दूसरों के लिए

2 कुरिन्थियों 9:12, 13 देखें। कुरिन्थुस के लोगों के दान से ''पवित्र लोगों की आवश्यकताएं'' पूरी होनी थीं और दूसरों को भी लाभ मिलना था।

हमारे से कितनी आवश्यकताएं पूरी होती हैं। हमारे पास इकट्ठा होने के लिए अच्छा भवन है, क्लास में बाइबल अध्ययन करने का अवसर है, निरन्तर वचन सुनने को मिलता है। जो कलीसिया के लोग नहीं हैं उन्हें लगातार वचन नहीं मिलता, उन लोगों को हमारे परोपकार के कार्यक्रमों से सहायता मिलती है और अन्य स्थानों में खोए हुओं को सुसमाचार सुनने का अवसर मिलता है। आपके दिए धन से होने वाली भलाई का पता केवल अनन्तकाल में ही लगेगा।

परमेश्वर के लिए

एक अर्थ में हमारी दी किसी चीज़ से परमेश्वर को लाभ नहीं होती। परमेश्वर को जीवित रहने के लिए हमारे दानों की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर मनुष्य जाति का उद्धार अपने लोगों द्वारा कर सकता है। यदि हम अपने आपको और अपने धन को उस कार्य के लिए लगाने में नाकाम होते हैं तो कई लोग नाश हो सकते हैं जिन्हें बचाया जा सकता था। और परमेश्वर जो चाहता है कि सबका उद्धार हो (2 पतरस 3:9) नहीं चाहता कि ऐसा हो।

परन्तु मुख्य बात यह है कि कुरिन्थुस के लोगों का दान ''परमेश्वर का धन्यवाद'' करने का और ''परमेश्वर की महिमा'' करने का कारण होना था। इसी प्रकार से जितनी भलाई हमारे दानों के द्वारा होती है, उतने ही लोग परमेश्वर की महिमा करेंगे और उसे धन्यवाद देंगे! वास्तव में यही हमारा उद्देश्य है: अपनी महिमा करवाना नहीं बल्कि यह कि ''वे [हमारे] भले कामों को देखकर [हमारे] पिता की जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें'' (मत्ती 5:16)।

भाईचारे के लिए

शायद इस दान का सबसे बढ़ा उद्देश्य उन अन्यजाति कलीसियाओं के बीच में जिनके साथ पौलुस ने काम किया था, यहूदिया की यहूदी कलीयिसाओं के सम्बन्धों को सुधारना था। यरूशलेम में दान भेजकर अन्यजाति मसीहियों ने यहूदी मसीही लोगों के लिए अपने प्रेम को दिखाना था और भाईचारे के दोनों ही धड़ों यानी यहूदियों और अन्यजातियों को प्रेम में एक दूसरे के निकट लाया जाना था।

यह आज भी होता है जब एक कलीसिया किसी दूसरी कलीसिया की सहायता करती है; जिसमें दोनों मण्डलियों को प्रेम में एक दूसरे के निकट लाया जाता है। इसके अलावा जब भी

कोई कलीसिया दान देती है वह हम सब की सहायता करती है। जब बहुत सी कलीसियाएं ने पोलैंड में आकाल पीड़ित लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहायता भेजी, तो पूरे भाइचारे को उनकी उदारता से लाभ हुआ।

परमेश्वर ने जो कुछ हमारे लिए किया है उसके कारण वह हमें देने को प्रोत्साहित करता है

2 कुरिन्थियों 9:15 कहता है: ''परमेश्वर को उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।'' यह सुझाव देता है कि हम इसलिए दान दें क्योंकि हमारे लिए परमेश्वर ने दिया है। परमेश्वर ने हमारे लिए कितने दान दिए हैं? हमारे पास जो भी अच्छी चीज़ है वह उसी की ओर से आती है! परन्तु केवल एक ''वर्णन से बाहर दान'' है जो इतना बड़ा है कि यह कि इसे वर्णन करना हमारी सामर्थ से बाहर है। वह दान क्या है। यह दान हमारे लिए उसके अपने पुत्र का है। ताकि हम बचाए जाएं। उस दान के लिए पौलुस कहता है, ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:8, 9; यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 3:16; इफिसियों 3:18, 19 भी देखें)। प्रभु को और देने के लिए कितना ज़बर्दस्त दान मिला है! जब हम यह सोचने लगे हैं तो हमें अपने प्रेम और अपने दानों की तुलना परमेश्वर के दान से करनी चाहिए!

सारांश

क्या आपने आपने आपको दे दिया? आप दान से अपने लिए स्वर्ग का मार्ग खरीद नहीं सकते। स्वर्ग में आप विश्वास से मांगते हुए परमेश्वर के प्रेम की आज्ञा का पालन करके ही जा सकते हैं। जब आप ऐसा करते हैं तो मसीह के लहू के द्वारा आप के पाप क्षमा किए जाते हैं। तब आपका सब कुछ और कोई और चीज़ देना स्वर्ग में जाने की टिकट खरीदने का तरीका नहीं बल्कि उस सब के लिए धन्यवाद जताना बन जाता है जो परमेश्वर ने आपके लिए किया है। अपने आपको दें ... अनुग्रह से उद्धार पाएं ... और आपका धन अपने आप दिया जाएगा।